



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

Handwritten: 14/08/1997

सं. 177]
No. 177]

नई दिल्ली, शुक्रवार, सितम्बर 12, 1997/भाद्र 21, 1919
NEW DELHI, FRIDAY, SEPTEMBER 12, 1997/BHADRA 21, 1919

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 12 सितम्बर, 1997

सं. 3/7/96-पब्लिक.—राष्ट्रपति जी को 5 सितम्बर, 1997 को 2130 बजे कलकत्ता में मदर टेरेसा की मृत्यु के विषय में सुनकर अत्यधिक दुःख हुआ है। उनके निधन से भारत ने अपने एक उदात्त नागरिक और सार्वकालिक महानतम सामाजिक कार्यकर्ताओं में से एक को खो दिया है।

2. मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त, 1910 को स्कोप्जे, यूगोस्लाविया में निकोलस बोजाव्हीठ और ट्रैनाफाइल बर्नाइ के घर हुआ था। जब वह केवल सात वर्ष की थीं, उनके पिता की मृत्यु हो गई। केवल 12 वर्ष की छोटी उम्र में उनके मन में नन बनने की लालसा पैदा हुई। वे फादर जाम्ब्रेनकोविक के सम्पर्क में आईं। फादर 1925 में पास्टर बने और उन्होंने सोडैलिटी आफ दि ब्लेस्ड वर्जिन मेरी नामक सोसाइटी की एक शाखा शुरू की। इस सोसाइटी से जुड़ने के बाद मदर टेरेसा को उन संतों, धर्म प्रचारकों, यूगोस्लाविया स्थित जीसस के अनुयायियों के बारे में जानकारी मिली जो 1924 में भारत के बंगाल प्रान्त में किसी मिशन पर गए थे। उनका हृदय गरीबों की सेवा को पेशे के रूप में अपनाने के लिए मचल उठा। अठ्ठारह वर्ष की उम्र में नन बनने के लिए उन्होंने अपना घरबार छोड़ने का निश्चय किया और 1928 में वे भारत के लिए रवाना हो गईं।

3. कलकत्ता पहुंचने के बाद मदर टेरेसा 16 जनवरी, 1929 को कोरेसे नाविशिइट, दार्जिलिंग गईं। नवशिष्यकाल (नाविशिइट) पूरा करने के बाद उन्हें सेंट मेरी नामक एक ऐसे स्कूल में शिक्षा देने कार्य सौंपा गया जो कलकत्ता के उप-नगर एटेली स्थित लोरेटो कानवेंट का हिस्सा था और यह सभी वर्गों के बच्चों के लिए अनाथालय का काम भी कर रहा था। प्रारम्भ में शिक्षिका के रूप में और 1937 से प्रिंसिपल के रूप में वहां उन्होंने कुल 17 वर्षों तक काम किया।

4. द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने के कुछ ही समय बाद 1942-43 में भयंकर अकाल पड़ा। मदर टेरेसा को भूख से तड़पते 200 बच्चों को अपनी देख-रेख में रखना पड़ा। इसके कुछ ही दिनों बाद भारत का विभाजन हुआ जिसके कारण इतिहास में तब तक सबसे अधिक लोगों को अपना मूल स्थान छोड़कर इधर-उधर जाना पड़ा। इन सभी दुःखद घटनाओं का मदर टेरेसा पर गहरा प्रभाव पड़ा और उन्होंने लोरेटो का परित्याग कर बेसहारा गरीबों की सेवा करने की द्यन ली। कलकत्ता की गरीबी से वे पहले ही परिचित थीं। उन्होंने 1948 में सेंट टेरेसा स्कूल में अपना पहला दवाखाना खोला और इसी स्कूल के बरामदे में सिलाई सिखाने की कक्षाएं चलाने लगीं। आजादी मिलने के थोड़े दिनों बाद ही मदर टेरेसा को भारतीय नागरिकता मिल गई।

5. धीरे-धीरे मदर टेरेसा ने अपनी संस्थाओं की गतिविधियों का विस्तार किया जिन्हें मिशनरीज आफ चैरिटी कहा जाने लगा। इनमें शामिल थे: बाल कल्याण, शैक्षिक स्कोम, परिवारों की देख-रेख, दिवांगिशु केन्द्र, आहार कार्यक्रम, शराबियों के लिए घर, रैन बसेरे, दवाखाने, कोढ़ियों के लिए औषधालय, पुनर्वास केन्द्र और लावारिसों, विकलांगों तथा मंदबुद्धि लोगों, अविवाहित माताओं, बीमार मरणासन्न अकिंचनों और एड्स के मरीजों के लिए घर। शैक्षिक गतिविधियों के अंतर्गत अनेक स्कूल और सिलाई की व्यावसायिक तथा दस्तकारी कक्षाएं चलाई जाती थीं। प्रेरितिक सूची में जेलों में दौरा करने, परिवारों से सम्पर्क करने कैथोलिक कार्य समूह और रविवार स्कूल जैसी गतिविधियां चलाई जाती थीं।

6. 1960 में मदर टेरेसा ने कलकत्ता से बाहर रांची में अपना पहला होम स्थापित किया और दिसम्बर 1995 तक उन्होंने 115 देशों में 559 से भी अधिक हाउस स्थापित कर लिए। इतना ही नहीं उन्होंने अनेक देशों में गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा करने के लिए बेसहारा लोगों के लिए होम स्थापित किए।

7. इनके अद्वितीय कार्य के लिए इन्हें विश्व के महानतम सम्मानों और पुरस्कारों से अलंकृत किया गया। 1962 में भारत सरकार ने उन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया। इसके बाद 1980 में उन्हें भारत के सबसे बड़े अद्वैतिक पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित किया गया। वर्ष 1979 में उन्हें नोबल शांति पुरस्कार और 1984 में महारानी एलिजाबेथ द्वारा आर्डर ऑफ मेरिट प्रदान किया गया। मदर टेरेसा ने विनम्रतापूर्वक इन पुरस्कारों को उन गरीबों के नाम पर स्वीकार कर लिया जिनके लिए वे और उनकी मिशनरीज ऑफ चैरिटी निष्ठापूर्वक सेवा कर रही थीं।

8. मदर टेरेसा के कार्य का प्रमाण-चिह्न मानव के प्रति सम्मान और मानवीय उपयोगिता और गरिमा है। वे परित्यक्तों, अभागों, मरणासन्न बेसहारा लोगों, परित्यक्त कोढ़ियों का अत्यधिक करुणापूर्वक स्वागत करती थीं। मदर टेरेसा एक ऐसी शांत किन्तु साहसी धर्मयोद्धा थीं जिन्होंने दुनिया के लाखों बेनाम, बेआवाज, बेसहारा, दबे कुचले और अकिंचल लोगों की तकलीफ कम करने के लिए दया और करुणा का धर्मयुद्ध छेड़ा। वे उन दुर्लभ व्यक्तियों में से थीं जो जाति, धर्म, नस्ल और राष्ट्र की सभी सीमाएं पार कर चुके थे।

9. मदर टेरेसा ने विनम्रता, विश्वास, प्रेम और करुणापूर्वक दरिद्र से दरिद्र व्यक्तियों की गाढ़े में सहायता की।

के. पद्मनाभय्या, गृह सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 12th September, 1997

No. 3/7/96/Public.—The President has learnt, with deep regret, of the death, in Calcutta, of Mother Teresa, at 2130 hours on 5th September, 1997. In her passing away, India has lost one of its noblest Citizens and one of the greatest social workers of all time.

2. Mother Teresa was born on 26th August, 1910 in Skopje, Yugoslavia, to Nicholas Bojaxhiu and Dranfile Bernai. She lost her father when she was barely seven years old. She was only twelve when she felt the urge to

become a nun. She came into contact with Father Jambrenkovic who became a pastor in 1925 and who started a branch of a Society called the Sodality of the Blessed Virgin Mary. With her association with this Society, Mother Teresa learnt about the lives of saints, missionaries and Yugoslav Jesuits who went on a Mission to the Bengal Province of India in 1924. She felt compelled in her heart that her vocation was to serve the poor. At the age of eighteen, she decided to leave home to become a nun and left for India in 1928.

3. On her arrival in Calcutta, Mother Teresa went to Coreto Novitiate, Darjeeling on 16th January, 1929. After completing her Novitiate, she was sent to teach at St. Mary School, a part of Loreto Convent in the Calcutta suburb of Entally, which also functioned as an orphanage for children of all denominations. She remained there for 17 years, first as a teacher and then, from 1937, as its Principal.

4. Close on the heels of the outbreak of World War II, came the Great Famine of 1942-43. Mother Teresa was faced with the prospect of 200 starving children on her hand. This was followed by the Partition of India with the largest human migration in history. All these painful events had a profound effect on Mother Teresa and she decided to renounce Loreto and serve the poor in the streets. She was no stranger to poverty in Calcutta. She opened her first dispensary at St. Teresa's School in 1948 and started sewing classes in its verandah. Soon after Independence, Mother Teresa acquired Indian Citizenship.

5. Slowly and gradually, Mother Teresa spread the activities of her Institutions which came to be known as Missionaries of Charity. These included child welfare, educational schemes, family visiting, day creches, feeding programmes, homes for the alcoholic, night shelters, dispensaries, leprosy clinics, rehabilitation centres, and homes for the abandoned, crippled and mentally retarded, unwed mothers, sick and dying destitutes and AIDS patients. Educational activities included various schools and sewing, commercial and handicraft classes. Under the Apostolic listing were prison visiting, family contacts, Catholic action Groups and Sunday Schools.

6. In 1960, Mother Teresa opened her first home outside Calcutta in Ranchi, Bihar and by December 1995, she had established more than 559 houses in 115 countries. She also opened homes for the destitutes in many countries to serve the poor and needy.

7. In recognition of her unique work, she was conferred with the World's highest honours and awards. She was awarded Padma Shri by Government of India in 1962 followed by Bharat Ratna—the Highest Civilian Award of India in 1980. She was conferred Nobel Peace Prize in 1979, and the Order of Merit was presented to her by Queen Elizabeth in 1984. Mother Teresa accepted these awards in humility in the name of the poor, whom she and her Missionaries of Charity so devotedly served.

8. The hallmark of Mother Teresa's work has been respect for the individual and the individual's worth and dignity. The loneliest and the most wretched, the dying destitute, the abandoned lepers were received by her with warm compassion. Mother Teresa was a quiet but courageous crusader who launched a mission of mercy and compassion, reaching out to alleviate the suffering of millions the world over—the nameless, voiceless, homeless, depressed and dispossessed. She was one of those rare persons who transcended all barriers of race, religion, creed and nation.

9. Mother Teresa rendered yeoman service to the poorest of poor with humility, faith, love and compassion.

K. PADMANABHAIAH, Home Secy.

